International Conference on
Women's Empowerment, Laws, Feminism,
Gender Discrimination, Gender Space and Women's Leadership:
Issues and Challenges in 21st Century (Naareevaad - 2019)

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता का उनके गृह वातावरण के संदर्भ में अध्ययन

कु0 पूजा

एस० आर० एफ० (शिक्षाशास्त्र), एस० एस० जे० परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा
E-mail: poojaprakash697@gmail.com

सारांष – प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण प्रविधि के द्वारा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विभिन्न जातिवर्ग की ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों के स्वास्थ्य–जागरुकता का उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया। शोध में उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंह नगर जिले से स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा विभिन्न जातिवर्ग की 1000 किशोरियों का चयन किया गया । शोध उपकरण के रुप में स्वनिर्मित स्वास्थ्य–जागरुकता मापनी द्वारा आकडों का संग्रहण किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। व्यैक्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता का उनके गृह वातावरण के साथ सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

प्रमुख पद – ग्रामीण एवं शहरी, किशोरी, जातिवर्ग, स्वास्थ्य जागरुकता, गृह वातावरण।

प्रस्तावना

"यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः"

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। मनुस्मृति के उपरोक्त कथन से विदित होता है कि प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है, उन्हे पूजनीय माना गया हैं। ऐसा इसलिए माना जाता है क्योंकि नारी प्रेम, दया, करूणा, ममता आदि गुणों की साक्षात प्रतिमूर्ति रही है। इसके बहुत से उदाहरण हमें उपने पौराणिक साहित्य में देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में भी कोई भी ऐसा क्षेत्र नही हैं जहाँ महिलाओं ने अपनी शारीरिक एवं मानसिक दृढ़ता एवं शक्ति का परिचय न दिया हो। कला, राजनीति, विज्ञान एवं तकनीकी, शिक्षा, सैन्य किसी भी क्षेत्र में महिलायें पुरूषों से कम नहीं हैं। इसके बावजूद भी हम समाज में देखते है कि वे घर में भी अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही है। वे अपने प्रति सजग हैं तथा अपने अस्तित्व को पहचानने लगी हैं।

जनगणना 2011 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 48.5% महिलायें हैं जो कि कुल जनसंख्या का लगभग आधा है। उत्तम स्वास्थ्य सभी की आवश्यकता है, इस पर पुरूषों तथा महिलाओं दोनों का समान अधिकार है। हम पाते है कि पुरूषों की अपेक्षा महिलाऐं स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछड़ी रहती है। अध्ययन बताते है कि महिलाओं की स्थिति सोचनीय है, विशेषकर किशोरावस्था में उचित पोषण न मिलना, स्वास्थ्य के प्रति सूचना एवं जानकारियों का अभाव तथा सामान्य स्वास्थ्य सम्बन्धी व्याधियों की अनदेखी के कारण भविष्य में वे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं का शिकार बनती हैं। लड़कों की तुलना में लड़कियों के स्वास्थ्य तथा पोषण के पहलुओं की उपेक्षा की जाती रही है। जिसका उनके स्वास्थ्य के प्रत्येक पहलू पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ***पुनिता एस0 अलदा एवं अन्य (1993)*** *के बालिकाओं के प्रति परिवार की माताओं के प्रत्यक्षण सम्बन्धित अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि शत प्रतिशत मातायें सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग के मामलों मे बीमारियों के प्रति सुरक्षा, गुणकारी भोज्य पदार्थो जैसे घी एवं दूध , खिलौने तथा शिक्षा के प्रति बालिकाओं की तुलना में बालकों को महत्व देती थी* । यहाँ बालिकाओं की उपेक्षा स्पष्ट होती हैं। वे कुपोषित एवं रक्ताल्पता आदि की शिकार होती है। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं। जैसे अशिक्षा, गरीबी, लिंग भेदभाव, पोषण तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव इत्यादि।

फलौरेन्स नाईटेंग्ल *के अनुसार, ''स्वास्थ्य की शुरुआत लोगो के घरों में से होती है।''* गृह वातावरण हमारी स्वास्थ्य जागरुकता व जीवन शैली को प्रभावित होती हैं। **सत्याबमा एवं अन्य (2014)** *के द्वारा किशोरियों की मानसिक स्वास्थ्य पर गृह वातावरण के प्रभाव एवं सम्बन्धों की जाँच हेतू किये अध्ययन में पाया कि किशोरियों के गृह वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।* महिलाओं के स्वास्थ्य पर उनके पालन–पोषण तथा गृह–वातावरण का

महत्वपूर्ण योगदान है। अतः हम कह सकते है कि गृह वातावरण महिला स्वास्थ्य का मुख्य घटक है।

राष्ट्रीय परिवार एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण–2 (1998-99) तथा राष्ट्रीय परिवार एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण –3 (2005-06) के आंकड़ों में स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे भी जातिगत भेदभाव स्पष्ट रुप सें देखा जा सकता हैं । इस प्रकार के समाज में महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय हैं। **यूनिसेफ के अनुसार ,"***दलित महिलाएं तीन तरह के भेदभावों का सामना करती हैं, पहला यह कि वे महिला हैं, दूसरा यह कि वे दलित हैं, तथा तीसरा यह कि वे दलित महिला हैं।***"** आज भी हम देखते है कि समाज के कुछ जाति वर्ग अन्य उच्च समझी जाने वाली जाति वर्गो की तुलना में पिछड़े हुये है। जीवन संकेतको जैसे शिक्षा, पोषण तथा स्वास्थ्य आदि के मामलों में भी ये अन्य वर्गो से पीछे हैं।

अतः उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि वर्तमान समय में किशोरावस्था में ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का होना आवश्यक है क्योंकि भविष्य में उनको विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करना है जिसके लिए किशोरावस्था से ही वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना आवश्यक हैं। अतः शोधकर्त्री ने किशोरावस्था की बालिकाओं के गृह वातावरण के प्रभाव का उनके स्वास्थ्य जागरूकता के सन्दर्भ में अध्ययन को अपने शोध विषय के रूप में चुना है।

षोध कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता का उनके गृह वातावरण के संदर्भ में अध्ययन।

शोध कार्य का सीमाकंन

प्रस्तुत शोध जनपद ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) के ग्रामीण तथा शहरी दोनो क्षेत्रों के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों तक सीमित है, जिसमे केवल कक्षा नौवीं तथा दसवीं में अध्ययनरत् सामान्य जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति किशोरियों को सम्मिलित किया गया हैं।

शोध के उद्देष्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न जाति वर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता का अध्ययन।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

अनुसंधान विधि –प्रस्तुत शोध के हेतु वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

ISBN-978-93-85822-95-7

न्यादर्श एवं न्यादर्शन प्रविधि

न्यायदर्ष – प्रस्तुत शोध में **समानुपाती स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन** विधि के प्रयोग द्वारा सभी जाति वर्ग की किशोरियों का न्यादर्श के रुप में चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श प्रारुप प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

न्यायदर्ष प्रारुप

स्थान	जाति वर्ग				योग
	सामान्य जाति	पिछड़ी जाति	अनु० जाति	अनु० जनजाति	
ग्रामीण	110	204	140	25	479
शहरी	105	275	135	05	521
योग	215	480	275	30	1000

चर

आश्रित चर – स्वास्थ्य जागरुकता
स्वतन्त्र चर – निवास स्थान, जातिवर्ग, गृह वातावरण।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध मे आंकड़ो के संकलन हेतु सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया किया गया । **स्वास्थ्य जागरुकता, व्यैक्तिक पृष्ठभूमि** तथा **गृह वातावरण** के मापन हेतु स्वनिर्मित तथा मानकीकृत शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. **व्यैक्तिक पृष्ठभूमि सूचना प्रपत्र ।**
2. स्वनिर्मित **स्वास्थ्य जागरुकता मापनी ।**
3. **ए॰ अख्तर** एंव **एस॰ बी॰ सक्सेना** द्वारा निर्मित **गृह वातावरण मापनी ।**

सांख्यिकी – आँकड़ों के विश्लेषण हेतु **मध्यमान, मानक विचलन** तथा **सहसम्बन्ध गुणांक** का प्रयोग किया गया।

आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

उद्देष्य 1 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता का अध्ययन।

तालिका 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता के मध्यमान एवं मानक विचलन विवरण

आश्रित चर	स्वतन्त्रचर (निवास)	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
स्वास्थ्य–जागरुकता	ग्रामीण	477	126.00	14.56
	शहरी	523	128.82	12.96

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण तथा शहरी किशोरियों का स्वास्थ्य–जागरुकता का मध्यमान क्रमशः 126.00 व 128.82 तथा मानक विचलन क्रमशः 14.56 व 12.96 है। उपरोक्त मध्यमानों के अन्तर से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण किशोरियाँ स्वास्थ्य के प्रति शहरी किशोरियों से कम जागरुक पाया गयी।

उद्देष्य 2 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

तालिका 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	477	475	0.418**	सार्थक

**= 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 475 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान, सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 पर प्रदर्शित मान 0.128 से अधिक है जो दर्शाता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के के मध्य परिमित कोटि का धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 1** अस्वीकृत होती हैं।

उद्देष्य 3 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

ISBN-978-93-85822-95-7

तालिका 3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	523	521	0.308**	सार्थक

**= 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 521 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान, सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 पर प्रदर्शित मान 0.115 से अधिक है जो दर्शाता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य निम्न कोटि का धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 2** अस्वीकृत होती हैं।

उद्देष्य 4 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न जाति वर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता का अध्ययन।

तालिका 4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न जाति वर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता के मध्यमान एवं मानक विचलन विवरण

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर (जाति वर्ग)	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
स्वास्थ्य जागरुकता	सामान्य	215	129.04	12.00
	पिछड़ी जाति	480	128.11	13.80
	अनुसूचित जाति	275	126.30	13.93
	अनुसूचित जनजाति	30	116.80	19.36

उपरोक्त तालिका में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न जाति वर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया हैं। मध्यमानों के अवलोकन से ज्ञात होता हैं कि सभी जाति वर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता औसत से उच्च हैं।

उद्देष्य 5 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

तालिका 5

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	215	213	0.303**	सार्थक

**= 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 213 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान, सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 पर प्रदर्शित मान 0.181 से अधिक है जो दर्शाता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य निम्न कोटि का धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 3** अस्वीकृत होती हैं।

उद्देष्य 6 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

तालिका 6

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	480	478	0.399**	सार्थक

**= 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 478 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 पर प्रदर्शित मान 0.128 से अधिक है जो दर्शाता है कि स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य निम्न कोटि का धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 4** अस्वीकृत होती हैं।

ISBN-978-93-85822-95-7

उद्देष्य 7 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

तालिका 7

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	275	273	0.340**	सार्थक

**= 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 273 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 पर प्रदर्शित मान 0.181 से अधिक है जो दर्शाता है कि स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य निम्न कोटि धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 5** अस्वीकृत होती हैं।

उद्देष्य 8 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

तालिका 8

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की किशोरियों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के मान का विवरण।

आश्रित चर	स्वतन्त्र चर	संख्या	स्वतंत्र अंश (df)	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	परिणाम
स्वास्थ्य जागरुकता	गृह वातावरण	30	28	0.371*	सार्थक

*= 0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकानुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, स्वतंत्र अंश (df) 28 पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांकों का मान सहसम्बन्ध तालिका में सार्थकता स्तर 0.05 पर प्रदर्शित मान 0.361 से अधिक है जो दर्शाता है कि स्वास्थ्य–जागरुकता एवं गृह वातावरण के मध्य परिमित कोटि का धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अतः **परिकल्पना 6** अस्वीकृत होती हैं।

षोध के परिणाम

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ी जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरणै के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष एवं विवेचना

प्रस्तुत शोध से ऊधमसिंह नगर जिले के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता के मध्यमानों के अन्तर से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण किशोरियाँ स्वास्थ्य के प्रति शहरी किशोरियों से कम जागरुक थी। **स्वाति दीक्षित एवं अन्य (2011) ने** *किशोरियों की उनकी शारीरिक बनावट के प्रति सजगता से सम्बन्धित अध्ययन में पाया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाली किशोरियाँ अपनी शारीरिक छवि के प्रति, शहरी झुग्गी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली किशोरियों से ज्यादा सजग पायी गई।*

वहीं अनुसूचित जनजाति की किशोरियाँ अन्य सभी जाति की किशोरियाँ स्वास्थ्य के प्रति से कम जागरुकता पायी गयी। अनुसूचित जाति की किशोरियाँ अनुसूचित जनजाति की किशोरियाँ से अधिक किन्तु सामान्य जाति व पिछड़ी जाति की किशोरियों से कम जागरुकता थी। पिछड़ी जाति की किशोरियाँ अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की किशोरियाँ से अधिक किन्तु सामान्य जाति की किशोरियों से कम जागरुकता थी। सामान्य जाति की किशोरियाँ अन्य सभी जातियों की किशोरियों की तुलना में स्वास्थ्य के प्रति सबसे अधिक जागरुकता पायी गयी। **एम0 के0 हसन एवं अन्य(2001)** *द्वारा कक्षा 9 तथा 10 में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थीयों की स्वास्थ्य जागरुकता एवं स्वच्छता की*

ISBN-978-93-85822-95-7

शिक्षा पर किये हस्तक्षेपीय अध्ययन में पाया कि जनजाति के विद्यार्थीयों की स्वास्थ्य जागरुकता बहुत कम हैं, स्वास्थ्य शिक्षा हस्तक्षेप द्वारा स्वास्थ्य जागरुकता मे सुधार लाया जा सकता हैं।

ऊधमसिंह नगर जिले के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी तथा सभी जातिवर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। यह सभी चरों के उत्तम गृह वातावरण को दर्शाता है जो कि किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता पर सकारात्मक प्रभाव डालती पायी गयी। **सत्याबमा एवं अन्य (2014)** *के द्वारा किशोरियों की मानसिक स्वास्थ्य पर गृह वातावरण के प्रभाव एवं सम्बन्धों की जाँच हेतू किये अध्ययन में पाया कि किशोरियों के गृह वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।*

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऊधमसिंह नगर जिले के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता शहरी किशोरियों से कम है, वहीं अनुसूचित जनजाति की किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता अन्य सभी जाति की किशोरियाँ कम है तथा ग्रामीण एवं शहरी तथा सभी जातिवर्ग की किशोरियों की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं उनके गृह वातावरण के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

षैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऊधमसिंह नगर जिले के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता शहरी किशोरियों से कम है, वहीं अनुसूचित जनजाति की किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता अन्य सभी जाति की किशोरियाँ कम है। अतः ऊधमसिंह नगर जिले में प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय–समय पर किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता के लिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों मे कैम्प, जागरुकता कार्यक्रम, कार्यशाला आयोजित किये जाने की आवश्यकता है, विद्यालय प्रशासन द्वारा अभिभावको व किशोरियो के लिए शिक्षको व स्वास्थ्य परामर्शदाताओं के द्वारा गोष्ठी एवं व्याख्यान का आयोजित किये जाने आवश्यकता है।

भावी षोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंह नगर जिले के शासकीय तथा सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक बालिका विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरियो पर किया गया है। भविष्य में उत्तराखण्ड राज्य के अन्य जिलों, दुर्गम व पर्वतीय क्षेत्रों, अशासकीय विद्यालयों मे, उच्च माध्यमिक स्तर किशोरियो, विद्यालय न जाने वाली किशोरियो की स्वास्थ्य–जागरुकता एवं का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता,एस॰पी॰, गुप्ता,अल्का, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन प० एण्ड डि०, इलाहाबाद।
2. कुमार, अरुण, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोती लाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
3. डॉ संतोष जैन पासी एवं सुरिंद्रा जैन (2016) "बालिका सशक्तीकरण में बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण का महत्व", कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास को समर्पित, जनवरी 2016 वर्ष 62 अंक 03।
4. Dixit ,S. et al,(2011) "A study on consciousness of adolescent girls about their body image" Indian J Community Med Vol 36 (3) pp 197-202.
5. Hassan, M.K, Jayaswal M, Hassan P.(2001) "Hygiene Education and Health Awareness in Tribal Students: An Intervention Study", Social Change.Dec 2001;31(4):76-92.
6. Jacob, K.S. , (2009) Caste and Inequalities in Health. The Hindu, 22 august 2009.
7. Kowal, Paul and Afshar, Sara (2015) " Health and the Indian caste system " The Lancet Volume 385, No. 9966, p415–416, 31 January 2015.
8. Punita, S. Alda et al, (1993) "Meternal Perception of Girls Status" Prachi Journal of Psycho-Cultural Dimension. Vol 9(1), pp 33-38.
9. Sathyabama, B and Jeryda Gnanajane Eljo, J.O.,(2014) "Family Environment and Mental Health of Adolescent Girls" International Journal of Humanities and Social Science Invention . Vol-3(9) Sept2014,PP.46-49
10. YOJANA July 2011, vol. 55.

ISBN-978-93-85822-95-7